Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

अंक 8

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

23 फरवरी 2017 ई   25 जमादियुल अव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अगर यह नबी हमारे पर इफ़्तरा (झूठ) करता तो हम उसे दाहिने हाथ से पकड़ लेते फिर उस की वह नस काट देते जो जान की रग है
भला यह क्या दलील हो सकती है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर झूठ बोलते तो मारे जाते और सब काम बिगड़ जाता लेकिन अगर कोई दूसरा झूठ बोले तो ख़ुदा नाराज़ नहीं होता बल्कि उससे प्यार करता है
जो कुछ ख़ुदा ने अपने उपकार तथा करम से मेरे साथ ऐसा किया यहाँ तक कि इस लम्बी अवधि में प्रत्येक दिन मेरे लिए तरक्की का दिन था और प्रत्येक मुकदमा जो मेरे नष्ट करने के लिए उठाया गया ख़ुदा ने शत्रुओं को अपमानित किया। अगर इस अवधि और समर्थन और नुसरत की तुम्हारे पास कोई मिसाल है तो पेश करो।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

18.अठारवां निशान ख़ुदा तआला का यह कथन है

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِیۡلِ ﴿۴۵﴾ لَاَخَذۡنَا مِنۡہُ بِالۡیَمِیۡنِ ﴿۴۶﴾ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡہُ الۡوَتِیۡنَ ﴿۴۷﴾

(अल्हाक्क: 45:47) अगर यह नबी हमारे पर इफ़्तरा (झूठ) करता तो हम उसे दाहिने हाथ से पकड़ लेते फिर उस की वह नस काट देते जो जान की रग है यह आयत हालांकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में नाज़िल हुई है लेकिन इसके अर्थों में सामान्य अर्थ है जैसा कि सारे कुरआन शरीफ में भी मुहावरा है कि जाहिरी तौर पर आदेश तथा मना किए जाने के संबोधित आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होते हैं लेकिन उन आदेशों में दूसरे भी शरीक होते हैं या वे आदेश दूसरों के लिए ही होते हैं जैसे कि यह आयत فَلَا تَقُلۡ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡهَرۡهُمَا وَقُلۡ لَّهُمَا قَوۡلًا كَرِيۡمًا अर्थात अपने माता पिता को तिरस्कार की बात मत कहो और ऐसी बातें उन से न कर जिन में उनके सम्मान का लिहाज़ न हो। इस आयत के संबोधित तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं लेकिन वाणी का सम्बोधन उम्मत की ओर है क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता और मां आपके बचपन के दिनो में ही वफात पा चुके थे और इस आदेश में एक रहस्य भी है और वह यह है कि इस आयत से एक बुद्धिमान समझ सकता है कि जब पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करके कहा गया है कि तो अपने माता पिता का आदर कर और प्रत्येक बोलचाल में उनके सम्मान का लिहाज़ रख तो दूसरों को अपने माता पिता का कितना आदर करना चाहिए और इसी की ओर यह दूसरी आयत इशारा करती है। وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِیَّاہُ وَبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا अर्थात तेरे रब ने चाहा है कि तू केवल उसी की इबादत कर और माता पिता पर दया कर। इस आयत में मूर्ति पूजकों को जो मूर्ति पूजा करते हैं समझाया गया है कि मूर्ति कुछ चीज नहीं हैं और मूर्तियों की तुम पर कुछ दया नहीं है। उन्होंने तुम्हें नहीं बनाया और तुम्हारे बचपन में वे तुम्हारे संरक्षक नहीं थे और अगर ख़ुदा जायज़ रखता कि उसके साथ किसी और की भी इबादत की जाए तो यह आदेश देता है कि आप माता-पिता की भी उपासना करो क्योंकि वे भी ज़िल्ली (प्रतिरूप) रब्ब हैं और हर एक व्यक्ति अपने आप यहां तक कि पशु तथा पक्षी भी अपने बच्चों को उनके बचपन में बर्बाद होने से बचाते हैं। इसलिए ख़ुदा की रबूबियत के बाद उनकी भी एक रबूबियत है और वह रबूबियत का जोश भी ख़ुदा तआला की तरफ से है।

इस बीच में आए वाक्यांश के बाद फिर हम मूल बात का उल्लेख करके कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जो कहा कि अगर वह हमारे पर कुछ इफ़्तरा करता तो हम इसे हलाक कर देते। इसका मतलब यह नहीं है कि सिर्फ ख़ुदा तआला आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह अपनी ग़ैरत प्रकट करता है कि आप अगर झूठ बोलने वाले होते तो आप को हलाक कर देता मगर दूसरों के बारे में यह ग़ैरत नहीं है और दूसरे चाहे कैसा ही ख़ुदा के बारे में झूठ बोलें और झूठे इल्हाम बनाकर ख़ुदा की ओर सम्बंधित करें उन के बारे में ख़ुदा की ग़ैरत जोश नहीं मारती। यह विचार जैसा कि तर्कहीन है ऐसा ही ख़ुदा की सभी किताबों के विपरीत भी है और अब तक तौरात में भी यह वाक्य मौजूद है कि जो व्यक्ति ख़ुदा पर झूठ बोलेगा नबुव्वत का झूठा दावा करेगा वह हलाक किया जाएगा। इस के अतिरिक्त प्राचीन से इस्लाम के उलेमा आयत "लौ तकव्वल अलैना" को ईसाइयों और यहूदियों के सामने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के लिए दलील के तौर पर पेश करते रहे हैं और ज़ाहिर है कि जब तक किसी बात में सामान्य न हो वह दलील काम नहीं दे सकती। भला यह क्या दलील हो सकती है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर झूठ बोलते तो मारे जाते और सब काम बिगड़ जाता लेकिन अगर कोई दूसरा झूठ बोले तो ख़ुदा नाराज़ नहीं होता बल्कि उससे प्यार करता है और उसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी अधिक छूट देता है और उसकी सहायता और समर्थन करता है उसका नाम तो तर्क नहीं रखना चाहिए बल्कि यह तो एक दावा है कि जो ख़ुद दलील का मोहताज है। खेद है मेरी दुश्मनी के लिए इन की कहाँ तक नौबत आ गई कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के निशानों पर भी हमले करने लगे। चूंकि इन लोगों को पता है कि मेरे इस दावा वह्यी और इलहाम पर पच्चीस साल से अधिक बीत चुके हैं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेअसत दिनों से भी अधिक है क्योंकि वह तेईस वर्ष थे और यह तीस साल के करीब और अब पता नहीं कि कहाँ तक ख़ुदा तआला के ज्ञान में मेरे दावत के दिनों का सिलसिला है इसलिए ये लोग वाबजूद मौलवी कहलाने कि यह कहते हैं कि एक ख़ुदा पर झूठ बोलने वाला और झूठे इलहाम बनाने वाला अपनी प्रारंभिक झूठ से तीस साल तक भी जीवित रह सकता है और ख़ुदा उसकी सहायता और समर्थन कर सकता है और इसकी कोई मिसाल पेश नहीं करते। हे बेबाक लोगो! झूठ बोलना और गन्दगी खाना एक बराबर है। जो कुछ ख़ुदा ने अपने उपकार तथा करम से मेरे साथ ऐसा किया यहाँ तक कि इस लम्बी अवधि* में प्रत्येक दिन मेरे लिए तरक्की का दिन था और प्रत्येक मुकदमे जो मेरे नष्ट करने के लिए उठाया गया ख़ुदा ने शत्रुओं को अपमानित किया। अगर इस अवधि और समर्थन और नुसरत की तुम्हारे पास कोई मिसाल है तो पेश करो। वरना आयत "लौ तकव्वल अलैना" के अनुसार यह चिन्ह भी साबित हो गया है और तुम इस से पूछे जाओगे।

* यह याद रहे कि अगर मेरे इल्हाम के ज़माने को उस तारीख़ से लिया जाए जब प्रथम भाग बराहीने अहमदिया का लिखा गया था तब तो उस साल से मेरे इल्हाम के ज़माने को सत्ताईस साल के करीब होते हैं और जब बराहीने अहमदिया के चतुर्थ भाग से गिना तो तब पच्चीस साल बीत गए हैं और जब वह समय लिया जाए कि जब पहला इल्हाम शुरू हुआ तब तीस साल होते हैं। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 213 -215)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

वक़्फ़े नौ किलास

सय्यदना हज़रत खलीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़

14 अक्तूबर 2016 ई को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफाते नौ तथा वाकफीन नौ के साथ किलास आयोजित की। इस कक्षा के कुछ प्रमुख सवाल तथा जवाब अख़बार बदर उर्दू 1 दिसम्बर 2016 ई के सहयोग से पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।(सम्पादक)

एक बच्ची ने सवाल किया कि कैसे पता लगे कि ख़वाब शैतानी है या अल्लाह से है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: मनोविज्ञान के जो विशेषज्ञ हैं वे कहते हैं कि हर इंसान को रात में तीन चार ख़वाब आते हैं। कुछ याद रह जाते हैं कुछ इंसान भूल जाता है या फिर सारे भूल जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि हमें ख़वाब नहीं आती। वह इतनी गहरी नींद सोते हीं कि उन्हें पता ही नहीं लगता कि रात क्या हुआ। ख़ुवाबें प्रत्येक को आती हैं। कई बार अच्छी ख़वाब भी आती है। यदि मनुष्य का दिमाग़ नेक है, उसके विचार नेक हैं उस को अच्छे सपने आते रहेंगे। अगर रात को तुम गंदी फिल्म देखकर सोए हो या कोई और बेहूदा चीज़ देख कर सोए हो तो कई बार इस प्रकार की ख़ुवाबें आती हैं। दिमाग़ पर जिन बातों का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। कई ख़ुवाबें होती हैं जो अल्लाह तआला विशेष रूप से किसी मार्गदर्शन के लिए देता है। इसमें कुछ संदेश होते हैं। कुछ बातें समझ नहीं आतीं। हज़रत यूसुफ के ज़माना में जिस तरह राजा ने ख़वाब देखा था जो तफसीर करने वाले थे उन्होंने कहा कि यह तुम्हारे मानसिक विचार हैं जो एक ख़वाब आ गई। सात गाए और सात बालियों का कोई मतलब नहीं। लेकिन जो कैदी हज़रत यूसुफ के साथ थे उनमें से जो एक रिहा हुआ था, हज़रत यूसुफ ने उससे कहा था कि राजा को जाकर मेरे विषय में बताना। जब उसने राजा की यह ख़वाब सुनी तो उसे हज़रत यूसुफ की याद आ गई। फिर हज़रत यूसुफ ने इसकी व्याख्या की कि कैसे तुम पर अच्छा समय आएगा तो अकाल का समय आएगा। इस अवधि में जो तुम्हारी अच्छी फसलें होंगी उन्हें अकाल वाले वर्षों के लिए संभाल कर रख लेना। फिर हुज़ूर अनवर ने बच्ची को बताया कि फसल क्या होती है हारवीसटिंग क्या है? हुज़ूर अनवर ने कहा कि गेहूं का एक हिस्सा होता है जिसके अंदर दाने भरे होते हैं उसे सिट्टा कहते हैं। बहरहाल वह एक ख़वाब था जिसकी व्याख्या हज़रत यूसुफ ने की। फिर अकाल आया तो हज़रत यूसुफ राजा ने जेल से निकाल लिया। यह उनके लिये एक रिहाई का साधन बन गया और उसने उनके वित्त मंत्री बना दिया। कुछ ख़ुवाबें ऐसी होती हैं कि उनकी व्याख्या समझ नहीं आती। लेकिन हज़रत यूसुफ को अल्लाह तआला ने सपनों के विषय में विशेष ज्ञान दिया हुआ था इस लिए उन्हें सपने की समझ आ गई। तो मनुष्य को अल्लाह तआला कुछ अच्छी ख़ुवाबें दिखाता है जिनका प्रभाव मनुष्य के मन पर होता है। अगर कोई अच्छी ख़वाब न हो तो मन पर ऐसा प्रभाव है कि माना जाता है कि इसका अच्छा परिणाम नहीं होगा। इसलिए कहते हैं कि कुछ सपनों के अर्थ समझ नहीं आती। इसलिए जब भी कोई ख़वाब देखो, तुम्हारे दिल पर अच्छा या बुरा असर हो, दोनों मामलों में सदका दे दिया करो। अगर शैतानी ख़ुवाबें होती हैं वह ऐसी होती हैं कि जैसे लोग कह देते हैं कि हमें ख़वाब आई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम झूठे हैं। यह अगर ख़वाब आई तो यह शैतानी ख़वाब है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि इस व्यक्ति ने मेरे बाद आना है और मेरे धर्म को फैलाना है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को दुनिया में फिर से स्थापित करना है यह कह दें कि झूठा है, बिल्कुल ग़लत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चुनौती दी कि अल्लाह तआला का समर्थन हमेशा उनके साथ है तो इस प्रकार की ख़ुवाबें शैतानी ख़ुवाबें होती हैं। अत: लोगों को अगर ख़वाब आया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं और एक ख़वाब आया कि वे झूठे हैं तो वह ख़ुद झूठा है वह ख़वाब शैतानी ख़वाब है। सपनों की तफसीर भी भिन्न है। जैसे एक बार हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीसरे बेटे हैं एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ख़ुवाब देखी कि मुहम्मद अहसान नाम का एक व्यक्ति है जिस की कब्र बाज़ार में है। इसे बाज़ार में दफनाया गया है। अब कुछ लोग कहेंगे कि यह अच्छी ख़वाब है, लोग चलते होंगे और उसकी कब्र पर दुआ करते होंगे। लेकिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह ख़वाब बताई तो आपने कहा कि मुहम्मद अहसान नाम का एक व्यक्ति या तो अहमदियत से मुर्तद हो जाएगा या कपटी होगा। बाद में फिर ऐसे हुए कि एक व्यक्ति जो सहाबी भी थे और नाम भी उनका यही था, ख़िलाफत सानिया के समय में जमाअत छोड़ गए। तो यह बात ज़ाहिर हो गई। इस तरह सपनों की लंबे विवरण होते हैं। लेकिन तुम्हें समझ या न आए तुम सदका दे दिया करो। क्योंकि प्रत्येक व्याख्या प्रत्येक को समझ नहीं आ सकती। इसका सरल इलाज यह है कि अच्छी हो या बुरी हो सदका दे दिया करो।

*** एक बच्ची ने सवाल किया कि इस्लाम का विकासवाद के विषय में क्या ख़्याल है?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया इस्लाम कहता है कि विकास हुआ है। अल्लाह तआला कहता है कि विकास हुआ है। मनुष्य की जो पूर्णता हुई है वह विकास के द्वारा हुई है। लेकिन हम यह नहीं मानते कि डार्विन के विकास का सिद्धांत ठीक थी। न beetle से इंसान बना न बंदर से। कुछ समय हुए नेशनल ज्योग्राफिक ने एक रिसर्च प्रस्तुत कि beetle से विभिन्न selections हुईं जिनसे अन्त में आदमी बना। यह सब व्यर्थ बात हैं। हां इंसान का अपना अलग विकास हुआ। मनुष्य एक अलग नस्ल है। मनुष्य धीरे धीरे बढ़ता गया। पहले इंसान जानवर की तरह था। जंगलों में जानवरों की तरह रहता था। वहाँ शिकार करता था। फिर गुफाओं में आ गया तो लोहे से काम लेना शुरू किया। फिर एग्रीकल्चर का दौर आया। इस तरह धीरे धीरे जमानों में वृद्धि हुई है। अपने आप को देख लो एक पीढ़ी का गैप ही काफी है। तुम देख लो Instagram, वाट्स एप्लिकेशन, iPad, iPhone और अमुक अमुक चीजें आती हैं। तुम्हारी दादी को कल्पना भी नहीं थी। न नानी को पता था। बल्कि कुछ की अम्मा को भी नहीं पता कि यह क्या बात है। इसका मतलब है कि तुम्हारे दिमाग़ की तरक्की हुआ। जिस तरह सोचें बढ़ती गईं, ज़माना मोर्डरन होता गया और ज्ञान बढ़ता गया। इसी तरह तुम्हारे दिमाग़ की तरक्की हुई, तुम्हारी इस रिसर्च या ज्ञान की प्यास पढ़ती गई। यह है मूल विकास। पहले छोटी सोच थी। जंगल का जीवन, फिर गुफा की फिर लोहा, फिर खेती शुरू हुई। छोटे छोटे उपकरण बनाने लग गए। अफ़्रीका में जब मैं अस्सी के दशक में था, बहुत सारे छोटे किसान, छोटे जमीनें थीं उनका उपकरण तलवार की तरह था जिस से वे खेती और ज़मीन को नरम करते थे। बस दो उपकरण उनके पास होते थे। एक hoe और दूसरा कटलस जिससे वे खेती करते थे। अब तो आधुनिक खेती हो गई है। ट्रैक्टर आदि आ गए हैं। इसी तरह यूरोप में है। अगर तुम उनके संग्रहालय में जाओ, ये तुम्हें अपने पुराने उपकरण दिखाएंगे। मानव तरक्की ही विकास है। बाकी बंदर से इंसान नहीं बना। इंसान, इंसान ही था। अगर तुम अधिक पढ़ना है तो हज़रत ख़लीफा राबे रहमहुल्लाह की किताब रेवीलेशन रेशनलटी पढ़ लो।

एक बच्ची ने सवाल किया कि क्या हम अल्लाह तआला को ख़वाब में देख सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: अल्लाह तआला क्या है। एक शरीर तो नहीं है। वह तो एक नूर है। हज़रत मूसा ने कहा था कि ख़ुदा मुझे अपना आप दिखा दे। अल्लाह तआला ने कहा, तुम नहीं देख सकते। लेकिन आपने कहा कि दिखा। फिर अल्लाह तआला ने कहा कि इस पहाड़ को देखो। मैं उस पर अपना थोड़ा जलवा डालूँगा अगर तुम ने इसे देख लिया तो तुम मुझे देख सकते हो। फिर अल्लाह तआला ने क्या किया? उस पर्वत पर ऐसी बिजली पड़ी कि टुकड़े हो

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हम में से कौन नहीं जानता कि मुसलमानों पर नमाज़ अनिवार्य है। कुरआन में कई जगह नमाज़ का महत्त्व विभिन्न संदर्भों से परिभाषित करके इस ओर ध्यान दिलाया गया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया है कि नमाज़ इबादत का मेरुदण्ड है फिर बच्चों को भी नमाज़ का पाबन्द करने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर माता-पिता ही नमाज़ के लिए पाबन्द नहीं होंगे तो बच्चों को कैसे कह सकते हैं या अगर बच्चे अपने इज्लासों या विभिन्न माध्यमों द्वारा यह हदीस सुन लें, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद सुन लें लेकिन घर में वे अपने बापों को नमाज़ के लिए पाबन्द न देखें तो उन पर क्या असर होगा?

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भेजा जिन्होंने हमें इबादतों और नमाज़ों की सही समझ पैदा करने की तरफ मार्गदर्शन किया।

बेशक एक सच्चे मोमिन पर नमाज़ फर्ज़ है और इस बात का उसे ख़ुद ख्याल रखना चाहिए लेकिन जमाअत में एक प्रणाली स्थापित है इस प्रणाली को भी ध्यान दिलाते रहना चाहिए। यह तथ्य स्पष्ट करते रहना चाहिए। अक्सर ख़ुत्बा में इस ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ किसी न किसी हवाले से नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया जाता है लेकिन फिर उसे आगे फैलाना मुरब्बियों और जमाअत की प्रणाली का काम है कि ध्यान दिलाएं। जमाअत के हर व्यक्ति तक नमाज़ के महत्त्व का संदेश बार बार पहुँचाएँ।

वास्तव में तो हम अहमदी होने का अधिकार तब अदा कर सकेंगे जब हम नमाज़ की रक्षा करते हुए उन से आध्यात्मिक आन्नद उठाने वाले होंगे।

जब अपनी इच्छाएं पूरी हो जाएं जब कठिनाइयों से निकल जाएं तो बहुत सारे ऐसे हैं जिनकी नमाज़ों में, विनम्र दुआओं में सुस्ती पैदा हो जाती है।

एक मोमिन को तो समाज की सामान्य हालात भी जो हैं वे भी दर्द पैदा करने वाले होने चाहिए और जब यह दर्द की स्थिति होती है तो दर्द से दुआएं भी निकलती हैं। पाकिस्तान में जैसे जमाअत के हालात बहुत ख़राब हैं हर तरफ से जमाअत के लोगों के ख़िलाफ घृणा के तीर बरसाए जा रहे हैं। द्वैष और ईर्ष्या की अभिव्यक्ति हो रही है। मुल्लाओं के डर से या उनकी बातों से ग़लतफहमी पैदा होने की वजह से पुराने संबंध वाले ग़ैर जमाअत वाले भी कुछ जगह विरोधों में बढ़ते चले जा रहे हैं। सामान्य रूप में भी देखें तो इन ज़ुल्मों की चरम हो चुकी है। ऐसे में पाकिस्तान में तो हर अहमदी को जहां आन्नद और सुख वाली नमाज़ें पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए वहाँ मस्जिदों को आबाद करने की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

ऐसा ख़ुत्बा सुनने का क्या फायदा जिस से हमारा ध्यान भी अल्लाह तआला की ओर न हो और इस बुनियादी फर्ज़ की तरफ न हो जो अत्यंत आवश्यक है। जैसा कि मैंने कहा कि मैं तो हर दूसरे तीसरे ख़ुत्बा में नमाज़ बा-जमाअत या इबादत के बारे में बात करता हूँ। अगर इसका असर ही नहीं होना तो बस संख्या की औपचारिकता पूरी करने का तो कोई फायदा नहीं है।

पाकिस्तान में जैसे अहमदियों की स्थिति मैंने बयान की है अगर इसके बाद भी अल्लाह तआला की ओर ध्यान पैदा नहीं होगा तो कब होगा? क्या हम अल्लाह तआला का नऊज़ो बिल्लाह परीक्षा लेना चाहते हैं कि हम ने तो ऐसे ही रहना है यह अल्लाह तआला का काम है कि हमारे हालात बदले। इसलिए पाकिस्तान के अहमदी को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। उपलब्धियां सोने से नहीं मिलेंगी उपलब्धियां लापरवाही से नहीं मिलेंगी उपलब्धियां सीमाओं पर घोड़े बांधने और छावनियाँ स्थापित करने से मिलेंगी।

कुछ जमाअतों में नमाज़ों की अच्छी उपस्थिति है लेकिन फिर भी कोई न कोई नमाज़ किसी न किसी की नष्ट हो रही है और कई ऐसे हैं जो कभी कभी एकाध नमाज़ भी पढ़ते हैं और इस का एक कारण जैसा कि मैंने कहा यह भी है कि प्रणाली इस पर ध्यान नहीं दिलाती और प्रणाली की भी अन्य प्राथमिकताएं हैं।

अगर आन्नद और सुख पैदा करने वाले नमाज़ी पैदा हो जाएंगी तो वित्तीय प्रणाली अपने आप ठीक हो जाएगी क्योंकि तक्वा की गुणवत्ता में बढ़ने से ही वित्तीय कुरबानी की ओर भी ध्यान पैदा होता है और यही नहीं बल्कि उमूर आमा और क़ज़ा की जो समस्याएं हैं बहुत हद तक हल हो जाएंगी बल्कि अगर सारे नमाज़ें सही तरह अदा करनी शुरू करें तो बाकी क्षेत्र भी सक्रिय हो जाएं

अल्लाह तआला ने अपनी हस्ती पर ईमान के बाद नमाज़ की स्थापना का आदेश दिया है। अतः हर अहमदी पुरुष स्त्री को भी अपनी नमाज़ की रक्षा और पुरुषों को विशेष रूप से बा-जमाअत अदा करने की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए।

अगर अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास है तो कैसे हो सकता है कि सुस्ती हो। तो आज दुनिया के जो हालात हो रहे हैं उनके बुरे प्रभावों से अपने आप को और अपनी नस्लों को बचाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ पवित्र होकर झुकना बहुत जरूरी है और इस झुकने का अच्छा माध्यम अल्लाह तआला और उसके रसूल और इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही बताया है कि अपनी नमाज़ों की अदायगी और सुरक्षा की तरफ हम ध्यान दें।

कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के सन्दर्भ में नमाज़ के महत्तव और पुरषों के लिए विशेष रूप से नमाज़ बा-जमाअत की तरफ विशेष ध्यान देने के लिए जमाअत के लोगों और जमाअत के निज़ाम को विशेष हिदायतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 20 जनवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ۔ أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ۔ بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْـمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ ۔ مٰلِـكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ ۔اِيَّـا كَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْـتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْـنَ اَنْعَمْـتَ عَلَيْـهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُـوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَاالضَّآلِّـيْنَ ۔

हम में से कौन नहीं जानता कि मुसलमानों पर नमाज़ अनिवार्य है। कुरआन में कई जगह नमाज़ का महत्त्व विभिन्न संदर्भों से परिभाषित करके इस ओर ध्यान दिलाया गया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया है कि नमाज़ इबादत का मेरुदण्ड है।

(उद्धरित सुनन अत्तिर्मज़ी किताबुद्दअवात हदीस 3371)

बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहां तक फरमाया कि नमाज़ को छोड़ना मनुष्य को कुफ्र और शिर्क के निकट कर देता है।

(सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस149)

फिर आप ने नमाज़ का महत्त्व फरमाते हुए फरमाया कि क़यामत के दिन सबसे पहले जिस चीज़ का बन्दे से हिसाब लिया जाएगा कि वह नमाज़ है। अगर तो यह हिसाब ठीक रहा तो सफल हो गया और मुक्ति पा ली वरना घाटा पाया नुकसान उठाया।

(उद्धरित सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुस्सताल हदीस 413)

फिर बच्चों को भी नमाज़ के लिए पाबन्द करने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया और फरमाया कि सात साल की उम्र तक पहुँचने पर बच्चे को नमाज़ की हिदायत करो और दस साल की उम्र में उस को नमाज़ का पाबन्द करने के लिए कोई सख्ती भी करनी पड़े तो करो। अगर माता-पिता ही नमाज़ के लिए पाबन्द नहीं होंगे तो बच्चों को कैसे कह सकते हैं या अगर बच्चे अपने इज्लासों या विभिन्न माध्यमों द्वारा यह हदीस सुन लें, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद सुन लें लेकिन घर में वे अपने बापों को नमाज़ के लिए पाबन्द न देखें तो उन पर क्या असर होगा? बेशक ऐसे बापों के बच्चे यह विचार करेंगे कि इस आदेश का कोई महत्त्व नहीं है बल्कि एक आदेश के महत्त्व को नज़र अंदाज करने से बच्चे के दिल में हर इस्लामी आदेश के महत्त्व का असर ख़त्म हो जाएगा। ऐसे लोग न केवल फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार ख़ुद घाटा पाने वालों में शामिल हो रहे हैं बल्कि अपने बच्चों को भी घाटा पाने वालों में शामिल करवा रहे हैं। सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए बच्चों की सांसारिक तरक्की के लिए तो माँ बाप चिंता व्यक्त कर रहे होते हैं लेकिन जो मूल चिंता का स्थान है परवाह नहीं होती।

फिर एक वास्तविक मोमिन के लिए केवल नमाज़ ही ज़रूरी नहीं है जिससे उसका आध्यात्मिक मैल गन्द दूर होता है जैसा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक उदाहरण देते हुए फरमाया कि क्या तुम समझते हो कि अगर किसी के दरवाज़े के पास से नहर गुज़र रही हो और वह पांच बार दैनिक नहाए तो उसके शरीर पर कोई मैल रह जाएगी। सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह! बेशक कोई मैल नहीं रहेगी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो यही उदाहरण पांच नमाज़ों की है। अल्लाह तआला उनके द्वारा गुनाह माफ करता और कमज़ोरियों को दूर करता है। (सहीह अल्बुख़ारी हदीस 528) पांच नमाज़ें पढ़ने वाले की रूह में कोई मैल नहीं रहती।

अत: यह है नमाज़ का महत्त्व जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सुंदर उदाहरण से वर्णन किया है लेकिन जैसा कि मैंने कहा बस नमाज़ पढ़ने का ही आदेश नहीं है बल्कि वास्तविक मोमिन पुरुषों को इस रूह की मैल हटाने के लिए अधिक विस्तार से बताया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने घर से वुज़ू किया फिर वह अल्लाह तआला के घर अर्थात मस्जिद की ओर गया ताकि वहां फर्ज़ नमाज़ अदा करे तो मस्जिद की ओर जाते हुए जितने कदम उसने उठाए उनमें से अगर एक कदम से उसका एक गुनाह माफ होगा तो दूसरे कदम से इसका एक स्तर ऊंचा होगा अर्थात हर कदम ही उसे इनाम देने वाला है।

(सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद हदीस 1406)

फिर एक अवसर पर बा-जमाअत नमाज़ के महत्त्व को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तरह बयान फ़रमाया कि मैं तुम्हें वह बात न बताऊँ जिस से अल्लाह तआला गुनाह मिटा देता है और स्तर ऊंचा करता है? सहाबा रिज़वानुल्लाह ने जो हर समय इस बात के लिए उत्सुक थे कि हमें कब कोई मौका मिले और हम अल्लाह तआला को ख़ुश करने की कोशिश करें, उसे राज़ी करने के तरीके सीखें, उसकी नज़दीकी प्राप्त करें। अपने गुनाहों से दूरियां पैदा करें उन्होंने ने अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह ज़रूर बताइए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। दिल न चाहने के बावजूद अच्छी तरह वुज़ू करना और मस्जिद में दूर से चल कर आना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतजार करना यह गुनाहों से दूरियां पैदा करता है। आपने फ़रमाया इतना ही नहीं यह एक प्रकार का "रिबात" है।(सहीह मुस्लिम किताबुत्तहारत हदीस 475) अर्थात सीमा पर छावनियाँ स्थापित करने के बराबर है जिस तरह देश अपनी रक्षा के लिए सीमाओं पर छावनियाँ बनाते हैं, सेना रखते हैं यह उसी तरह है।

सीमाओं पर छावनियाँ क्यों स्थापित की जाती हैं? जैसा कि मैंने कहा अपने देश की रक्षा के लिए। इसलिए कि दुश्मन के हमले से सुरक्षित रहा जाए और हमले के मामले में तुरंत मुकाबला के लिए तैयार हुआ जा सके।

अत: एक मोमिन को सबसे बड़ा खतरा जिससे बचने के लिए इस को ज़रूरत है जिसके बचने के लिए छावनी स्थापित करने की ज़रूरत है। वह ख़तरा शैतान है सांसारिक इच्छाओं का ख़तरा है जो शैतान दिल में पैदा करता है। उनके द्वारा शैतान हमला करता है। अत: उन से बचने के लिए नमाज़ बा-जमाअत की छावनी है यही पहरेदारों की टुकड़ी है जो शैतान के हमलों से बचाएगी। गुनाहों से इंसान बचेगा और नेकियों की ओर ध्यान पैदा होगा।

इसी तरह नमाज़ बा-जमाअत में अकेले नमाज़ पढ़ने की तुलना में 27 गुना अधिक सवाब है इसके बारे में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुल अज़ान हदीस 645)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बा-जमाअत नमाज़ का महत्त्व बयान फरमाते हुए एक जगह फरमाते हैं कि "नमाज़ में जो जमाअत का ज्यादा सवाब रखा है।" (अर्थात नमाज़ बा-जमाअत में जो अधिक सवाब रखा है।) "इसमें यही उद्देश्य है कि एकता पैदा होती है और फिर एकता को व्यावहारिक रंग लाने की भी हिदायत और ताकीद है कि परस्पर पैर भी बराबर हों।" (अर्थात पैर भी जब सीधे पंक्ति में खड़े हों तो बराबर हों इसके लिए एड़ियाँ बराबर की जाती हैं) "और पंक्ति सीधी हो और एक दूसरे से मिले हुए हों इससे मतलब है कि मानो एक ही इंसान का आदेश रखें।" (पंक्तिया होंगी तो एक इंसान की तरह बन जाएंगे अर्थात उस में ताकत पैदा होगी) "और एक के नूर दूसरे में प्रवेश करेंगें।" फरमाया "वह भेद जिससे ख़ुदी और स्वार्थ पैदा होता है न रहे" (अर्थात अमीर भी ग़रीब भी सब एक पंक्ति में खड़े होंगे। कुछ लोगों के दिमाग़ों में अंहकार होता है या स्वार्थ होता है उसे बा-जमाअत नमाज़ समाप्त करती है।) फरमाया कि "यह ख़ूब याद रखो कि इंसान में यह शक्ति है कि वह दूसरे के नूर को अवशोषित करता है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 247-248)(किसी में अधिक नेकी का अधिक प्रभाव है नेकियों के ऊंचे स्थान पर है तो दूसरा भी उस प्रभाव को स्वीकार करेगा।)

अत: नेकियों के प्रभाव को स्वीकार करने के लिए बा-जमाअत नमाज़ भी लाभ देती है। अत: बा-जमाअत नमाज़ से जहां एक ओर एकता की अभिव्यक्ति है जो अल्लाह तआला उम्मत में पैदा करना चाहता है वहाँ एक दूसरे की अच्छाइयों का भी असर होता है। जब एक ही पंक्ति में अधिक नेकियाँ करने और आध्यात्मिक रूप से बढ़े हुए और इतने कमज़ोर लोग जो हैं वे भी खड़े होंगे तो कमज़ोरों पर नेकियों का असर पड़ेगा और उनमें भी नेकियों में बढ़ने और विकसित करने और आध्यात्मिकता बढ़ाने की शक्ति बढ़ेगी और जब यह एकता पैदा होती है और जब रूहानियत बढ़ती है तो शैतानी ताकतें कमज़ोर हो जाती हैं।

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भेजा जिन्होंने हमें इबादतों और नमाज़ों की सही समझ पैदा करने की तरफ मार्गदर्शन किया। अत: अगर हम एक तरफ तो यह दावा करें कि हम अपनी आध्यात्मिक हालत में सुधार और एकता की स्थापना के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मान लिया है और दूसरी ओर हमारे कर्मों और विशेष रूप से मूल इस्लामी आदेश का पालन करने में कमज़ोरी हो। जो मूल कर्तव्य है इसमें कमज़ोरी हो। इस बात में कमज़ोरी हो जो हमारे जन्म का उद्देश्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो न्यूनतम मानक अल्लाह तआला ने निर्धारित किया है इस बात में कमज़ोरी हो तो हम कैसे दावा कर सकते हैं कि हम अपनी आध्यात्मिक हालत के विकास और अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश पर लब्बैक कहते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है।

जैसा कि मैंने बताया कि कुरआन में भी कई जगह पांच नमाज़ों की फरज़ियत बयान हुई है, महत्त्व का वर्णन हुआ है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश भी बड़े स्पष्ट हैं कि जो मैंने बयान किए हैं। ये नमाज़ें तो हर अहमदी के लिए फर्ज़ हैं ही लेकिन साथ ही जैसा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बा-जमाअत का महत्त्व वर्णन किया है हर बुद्धि रखने वाले वयस्क पुरुष पर बा-जमाअत नमाज़ अनिवार्य है लेकिन उसकी तरफ हम देखते हैं कि पूरा ध्यान नहीं है और कमज़ोरी है। बेशक एक सच्चे मोमिन पर नमाज़ फर्ज़ है और इस बात का उसे ख़ुद ख्याल रखना चाहिए लेकिन जमाअत में एक प्रणाली स्थापित है इस प्रणाली को भी ध्यान दिलाते रहना चाहिए। यह तथ्य स्पष्ट करते रहना चाहिए। अक्सर ख़ुत्बा में इस ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ किसी न किसी हवाले से नमाज़ की ओर ध्यान

दिलाया जाता है लेकिन फिर उसे आगे फैलाना मुरब्बियों और जमाअत की प्रणाली का काम है कि ध्यान दिलाएं। जमाअत के हर व्यक्ति तक नमाज़ के महत्त्व का संदेश बार बार पहुँचाएँ। वास्तव में तो हम अहमदी होने का अधिकार तब अदा कर सकेंगे जब हम नमाज़ की रक्षा करते हुए उन से आध्यात्मिक आन्नद उठाने वाले होंगे और जब यह आध्यात्मिक आन्नद और मज़ा प्राप्त होना शुरू हो जाएगा तो नमाज़ों के अदा करने की तरफ आपने आप ध्यान पैदा हो जाएगा।

इसलिए इस ओर जैसा कि मैंने कहा कि हर अहमदी को ख़ुद ध्यान देने की ज़रूरत है कि कैसे हम ने अपनी नमाज़ पढ़नी है। ऐसी नमाज़ है जो हार्दिक आन्नद हमें दिलवा सके, जो हमें सुख प्रदान करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ अदा करने की तरफ ध्यान दिलाते हुए कि कैसे यह आन्नद प्राप्त हो सकता है। आप ने उदाहरण दिया फरमाया कि "मैं देखता हूँ कि एक शराबी और नशा करने वाला मनुष्य जब आन्नद नहीं आता तो वह एक के बाद दूसरा जाम पीता है।"(नशा प्राप्त करने के लिए पीता चला जाता है।) "यहां तक कि उस को एक प्रकार का नशा प्राप्त हो जाता है।" फरमाया कि "ज्ञानी और बुद्धिमान इंसान इससे लाभ उठा सकता है।" (अर्थात इस उदाहरण से यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति है तो वह लाभ उठा सकता है।) "और वह यह" (कैसे लाभ उठाना है अपनी आध्यात्मिकता को तेज़ करने के लिए नमाज़ की ओर ध्यान देने के लिए)कि नमाज़ पर स्थायीकरण करे।" (नमाज़ में नियमितता धारण करे और कभी न छोड़े।) फरमाया "और पढ़ता जाए यहां तक कि उसे आन्नद आ जाए है और जैसे कि शराबी के मन में एक आन्नद होता है जिसका प्राप्त करना उसका गंतव्य होता है।" शराबी जब शराब पीता है तो दिमाग़ में उसने अपनी एक गुणवत्ता भी निर्धारित की होती है कि मैंने यह आन्नद प्राप्त करना है। फरमाया कि जो गुणवत्ता वह अपने नशे के लिए प्राप्त करता है तो एक आध्यात्मिक व्यक्ति को, एक मोमिन को भी अपना कोई गंतव्य बनाना चाहिए जिस को उस ने नमाज़ के लिए हासिल करना है और इसी तरह बार बार लगातार कोशिश से होगा तो तभी आन्नद मिल सकता है। आप फरमाते हैं कि "इसी तरह से मन में और सारी शक्तियों की प्रवृत्ति नमाज़ में इसी आन्नद को प्राप्त करना है।" एक नमाज़ी जब नमाज़ पढ़े तो दिमाग़ में यह बात रखे और अपना जो भी ध्यान है और जितनी ताकतें हैं उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए इस्तेमाल करे कि मैंने यह आन्नद हासिल करना है और इसके लिए इच्छा शक्ति को बढ़ाने की ज़रूरत है। अगर इच्छा शक्ति होगी तो ही स्थिरता भी रह सकेगी। आप फरमाते हैं कि "और फिर एक ईमानदारी और उत्साह के साथ कम से कम उस नशा करने वाले की बैचेनी, चिन्ता और व्याकुलता और पीड़ा की तरह ही एक दुआ पैदा हो कर वह सुख प्राप्त हो तो मैं कहता हूँ और सच कहता हूँ..... कि निश्चित रूप से निश्चित रूप से वह आन्नद प्राप्त हो जाएगा।" फिर एक दर्द और चिंता होगी। एक पीड़ा होगी। एक चिंता होगी कि काश मुझे नमाज़ में आन्नद मिले। नमाज़ पढ़ते हुए इस चिंता की बार बार अल्लाह तआला के आगे अभिव्यक्ति हो तो आप फरमाते हैं कि वास्तव में वे आन्नद मिल जाएगा सुख प्राप्त हो जाएगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 7-8 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

इसलिए स्थिरता के साथ नमाज़ में उसका आन्नद लेने की कोशिश आख़िर एक समय में दिल को पिघला कर वह मज़ा दे देती है। आप ने इस बात की भी ताकीद फरमाई कि अल्लाह तआला फरमाता है कि नमाज़ बेहयाइयों (निर्लज्जता) और बुराइयों से बचाती है लेकिन फिर भी हम देखते हैं, लोग सवाल भी करते हैं बावजूद नमाज़ पढ़ने के लोग बुराइयाँ करते हैं तो आप फरमाते हैं कि इसका जवाब यह है कि रूह और सच्चाई के साथ नमाज़ नहीं पढ़ते बल्कि रस्म और आदत के रूप में टकरें मारते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 8 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

इसलिए हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला फरमाता है कि नमाज़ बुराइयों से बचाती है तो निश्चित रूप से यह सच है। अल्लाह तआला का कलाम झूठा नहीं हो सकता। जिन लोगों में नमाज़ें पढ़ने के बावजूद बुराईयां बनी रहती हैं उनकी नमाज़ें केवल बाहरी नमाज़ें होती हैं वह उसकी रूह को नहीं समझते। इसलिए यह बहुत ही चिंता योग्य बात है जिस पर हम में से हर एक को अपनी स्थिति का आकलन करना चाहिए। अगर हमें सुख और आन्नद आ रहा हो अथवा यह पक्का इरादा हो कि मैंने सुख और आन्नद हासिल करना है तो कैसे हो सकता है कि हम में से कोई अपनी नमाज़ में नियमित न हो। प्रत्येक को कभी न कभी इस सुख और आन्नद का अनुभव हो जाता है और हुआ होगा। मुश्किल और परेशानी में जब कोई होता है तो हम देखते हैं नमाज़ों में कई ऐसे हैं जो बड़े रोते हैं, गिड़गिड़ाते हैं चलते फिरते भी अल्लाह तआला से दुआ करते हैं उस की तरफ ध्यान रहता है और इसलिए फिर इबादत की तरफ भी ध्यान पैदा हो रहा होता है तो कोई न कोई उनके दिल में यह विचार पैदा होता है और कुछ न कुछ ध्यान पैदा हो रही होती है जिसकी वजह से वह कष्ट के मामले में स्थायी नमाज़ में लगे रहते हैं लेकिन जब अपनी इच्छाएं पूरी हो जाएं जब कठिनाइयों से निकल जाएं तो बहुत सारे ऐसे हैं जिनकी नमाज़ों में, विनम्र दुआओं में सुस्ती पैदा हो जाती है। अत: जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हमें लगातार प्रयास से अपने सामने यह लक्ष्य रखना है कि चाहे हालात अच्छे हों या बुरे, तंगी में भी और सुविधा में भी आन्नद और सुख को प्राप्त करने की कोशिश करनी है जो नशा की अवस्था ला दे और केवल व्यक्तिगत परिस्थितियां ही नहीं एक मोमिन को तो समाज की सामान्य हालात भी जो हैं वे भी दर्द पैदा करने वाले होने चाहिए और जब यह दर्द की स्थिति होती है तो दर्द से दुआएं भी निकलती हैं।

पाकिस्तान में जैसे जमाअत के हालात बहुत ख़राब हैं हर तरफ से जमाअत के लोगों के ख़िलाफ घृणा के तीर बरसाए जा रहे हैं। द्वैष और ईर्ष्या की अभिव्यक्ति हो रही है। मुल्लाओं के डर से या उनकी बातों से ग़लतफहमी पैदा होने की वजह से पुराने संबंध वाले ग़ैर जमाअत वाले भी कुछ जगह विरोधों में बढ़ते चले जा रहे हैं। सामान्य रूप में भी देखें तो इन ज़ुल्मों की चरम हो चुकी है। ऐसे में पाकिस्तान में तो हर अहमदी को जहां आन्नद और सुख वाली नमाज़ें पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। वहाँ मस्जिदों को आबाद करने की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

पिछले दिनों ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान की ओर से शूरा के निर्णयों के अनुपालन की रिपोर्ट आई जिसमें उन्होंने लिखा कि संख्या के आधार पर प्रशिक्षण के फैसला में हमने यह उपलब्धियां हासिल की हैं। बड़ी अच्छी बात है। तरक्की की ओर कदम बढ़े हैं उनके प्रशिक्षण के मामलों की बहुत सी बातों में से एक बात यह भी थी कि मेरा जुम्अ: का ख़ुत्बा सुनने की ओर इतने हज़ार ख़ुद्दाम का ध्यान पैदा हुआ है लेकिन जो चिंता योग्य बात है वह यह कि नमाज़ बा-जमाअत के आदी ख़ुत्बा जुम्अ: सुनने वालों के तीसरा हिस्सा थे या इससे थोड़ा अधिक थे। इसी तरह नमाज़ के आदी ख़ुद्दाम की संख्या भी ख़ुत्बा सुनने वालों से काफी कम थी। ऐसा ख़ुत्बा सुनने का क्या फायदा जिस से हमारा ध्यान भी अल्लाह तआला की ओर न हो और इस बुनियादी फर्ज़ की तरफ न हो जो अत्यंत आवश्यक है।

जैसा कि मैंने कहा कि मैं तो हर दूसरे तीसरे ख़ुत्बा में नमाज़ बा-जमाअत या इबादत के बारे में बात करता हूँ। अगर इसका असर ही नहीं होना तो बस संख्या की औपचारिकता पूरी करने का तो कोई फायदा नहीं है। पाकिस्तान में जैसे अहमदियों की स्थिति मैंने बयान की है अगर इसके बाद भी अल्लाह तआला की ओर ध्यान पैदा नहीं होगा तो कब होगा? क्या हम अल्लाह तआला की नऊज़ो बिल्लाह परीक्षा लेना चाहते हैं कि हम ने तो ऐसे ही रहना है यह अल्लाह तआला का काम है कि हमारे हालात बदले। अगर यही अभिव्यक्ति है तो अल्लाह तआला से शिकवा का कोई अधिकार नहीं है। अल्लाह तआला ने कहीं नहीं कहा कि तुम जो चाहे करो मेरे हक़ अदा करो या न करो, क्योंकि तुम ने मसीह मौऊद को मान लिया है इसलिए मैं तुम्हें सफतला दूंगा। सफतलाएं प्राप्त करने के लिए अपनी हालतों को अल्लाह तआला की रज़ा के अनुसार ढालने की ज़रूरत है।

ख़ुद्दाम की रिपोर्ट में उल्लेख किया है तो इसका मतलब यह नहीं कि यह कमज़ोरी केवल ख़ुद्दामुल अहमदिया की है। अंसार का भी यही हाल है। इसलिए पाकिस्तान के प्रत्येक अहमदी को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। सफलताएं सोने से नहीं मिलेंगी। सफलताएं लापरवाही से नहीं मिलेंगी। सफलताएं सीमाओं पर घोड़े बांधने और छावनियाँ स्थापित करने से मिलेंगी। पाकिस्तान से निकल कर जो लोग बाहर आए हैं या सामान्य रूप से हर जगह जमाअत में इन विकसित देशों में भी और बाकी दुनिया में भी उनकी स्थिति भी यही है। हम यह नहीं कह सकते कि बाहर आकर बड़े नमाज़ी हो गए या हर जगह नमाज़ी हैं। जमाअतों की समीक्षा करें तो नमाज़ के मामले में बहुत सारी कमज़ोरियां नज़र आएंगी। प्रत्येक संगठन इंसाफ से अपनी समीक्षा करे। हर देश में तो परिणाम स्वत: सामने आ जाएंगे लेकिन पाकिस्तान से बाहर आए हुए जो लोग हैं उन्हें विशेष रूप से यह ध्यान रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन पर अनुग्रह किया है उसका धन्यवाद भी अदा करना है उस की अभिव्यक्ति कैसे करनी है।

कुछ जमाअतों में नमाज़ों की अच्छी उपस्थिति है लेकिन फिर भी कोई न कोई

नमाज़ किसी न किसी की नष्ट हो रही है और कई ऐसे हैं जो कभी कभी एकाध नमाज़ भी पढ़ते हैं और इस का एक कारण जैसा कि मैंने कहा यह भी है कि प्रणाली इस पर ध्यान नहीं दिलाती और प्रणाली की भी अन्य प्राथमिकताएं हैं।

मेरे ख़ुत्बे अव्वल तो प्रत्येक सुनता ही नहीं। यह कहना कि सौ प्रतिशत लोग सुनते हैं यह भी ग़लत है और सुन भी लें तो भी स्थायी याद करवाना जमाअत की प्रणाली का काम है। इसलिए प्रणाली स्थापित की गई है ताकि प्रशिक्षण की ओर ध्यान हो।

पिछले दिनों यहां एक जमाअत की कार्यकारिणी की बैठक थी तो सदर महोदय ने बताया कि जब से मैं सदर बना हूं वित्तीय प्रणाली की ओर मैंने बहुत ध्यान दिया है और अब हम इस में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं तो मैंने उन्हें कहा कि ठीक है यह कोशिश तो आप ने की लेकिन जो एक मोमिन के लिए मुख्य बात है और फर्ज़ है अर्थात नमाज़ इसके लिए आप ने क्या कोशिश की।? तो इस बारे में चुप्पी थी। यद्यपि सुबह और इशा की नमाज़ की उपस्थिति के बारे में मैंने जो पूछा और समीक्षा की तो इसमें जो आंकड़े सामने आए काफी बेहतर थे लेकिन प्रणाली की इसमें कोई कोशिश नहीं थी। अगर आन्नद और सुख पैदा करने वाले नमाज़ी पैदा हो जाएंगे तो वित्तीय प्रणाली अपने आप ठीक हो जाएगी क्योंकि तक्वा की गुणवत्ता में बढ़ने से ही वित्तीय कुरबानी की ओर भी ध्यान पैदा होता है और यही नहीं बल्कि उमूर आमा और क़ज़ा की जो समस्याएं हैं बहुत हद तक हल हो जाएंगी बल्कि अगर सारे नमाज़ें सही तरह अदा करनी शुरू करें तो बाकी विभाग भी सक्रिय हो जाएंगे।

और आजकल तो सिर्फ पाकिस्तान ही नहीं दुनिया के सामान्य हालात ऐसे हैं कि युद्ध और विनाश का खतरा काफी बढ़ रहा है सरकारों ने भी अब यह व्यक्त करना शुरू कर दिया है और इसके लिए कुछ हद तक कार्रवाई भी शुरू कर दी हैं ऐसे समय में अल्लाह तआला की शरण ही है जो बचाएगी।

बहुत से लोग लिखते हैं कि लड़ाई शुरू होगी तो क्या होगा हम क्या करें? तो उन्हें यही जवाब है कि अगर इन खतरों से बचना है तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा है अदभुत कार्य करने वाले ख़ुदा से प्यार करना होगा और इस प्यार का एक ही तरीका है कि अपनी नमाज़ और अपनी इबादतों को इस आदेश के अनुसार ढालते हुए आन्नद और सुख पैदा करने की हम कोशिश करें।

अक्सर लोग इन देशों में आकर सांसारिक सुविधाओं को देखकर ख़ुदा तआला को भुला देते हैं। उनके विचार में यह सुविधाएं उन्हें इन देशों की तरक्की की वजह से मिली है और यह विचार उठता है कि ये लोग इतने विकसित हैं लेकिन उनकी तरक्की कौन से उनके कर्म हैं कौन सी इबादतें कर रहे हैं फिर भी तरक्की कर रहे हैं और फिर कुछ यह भी सोचते हैं कि हम उन से तो बेहतर है कि पांच में से पांच नमाज़ें अगर फर्ज़ हैं तो दो तीन नमाज़ें तो पढ़ ही लेते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि ख़ुदा को भूलने वालों के लिए अंत में सज़ा भाग्य में है तो उन के पीछे न चलें। हम ने अगर अल्लाह तआला के अज़ाब से बचना है और अपनी नस्लों को बचाना है तो उन की यह ज़ाहरी हालत न देखें बल्कि शिक्षा के अनुसार कार्य करें जो ख़ुदा तआला हम से चाहता है।

अल्लाह तआला ने अपनी हस्ती पर ईमान के बाद नमाज़ की स्थापना का आदेश दिया है। अत: हर अहमदी पुरुष स्त्री को भी अपनी नमाज़ की रक्षा और पुरुषों को विशेष रूप से बा-जमाअत अदा करने की ओर बहुत ध्यान देना चाहिए।

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के महत्त्व, इस के पढ़ने के तरीके, इस के दर्शन के बारे में बहुत खोल खोलकर उल्लेख किया है। अल्लाह तआला ने अपना फज़्ल फरमाते हुए हमें आप को मानने की तौफ़ीक़ अता फरमाई लेकिन इसके बावजूद अगर हम मुख्य बात का पालन नहीं करेंगे जैसा कि मैंने कहा और दूसरों की तरह दो तीन नमाज़ पर ही संतोष करेंगे जिस तरह अक्सर ग़ैर अहमदी भी इसी तरह करते हैं तो इस बैअत का कोई फायदा नहीं है।

नमाज़ों के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें किस गुणवत्ता पर देखना चाहते हैं इस बारे में किस तरीके से आप ने हमें समझाया है इसके लिए आप के कुछ उपदेश प्रस्तुत करता हूँ। एक मोमिन ला इलाहा इल्लल्लाह का कलमा पढ़कर तौहीद की घोषणा करता है और तौहीद क्या है? इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"अत: ख़ूब याद रखो और फिर याद रखो कि ग़ैर अल्लाह की तरफ झुकना ख़ुदा तआला से काटना है।" (अल्लाह तआला से संबंध ख़त्म करना है।) फरमाया "नमाज़ और तौहीद कुछ ही हो।"(ख़ुद फरमाते हैं कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के व्यावहारिक अभिव्यक्ति का नाम ही नमाज़ है। तौहीद का मुंह से दावा तो कर दिया लेकिन इसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति का नाम नमाज़ है) फरमाया "नमाज़ और तौहीद कुछ ही हो....... उसी समय बिना बरकत के और निरर्थक होती है जब इसमें विनम्रता और विनय की रूह और झुकने वाला दिल न हो।" फरमाया "सुनो वह नमाज़ जिसके लिए "उदओनी अस्तजिब लकुम" अर्थात मुझे पुकारो मैं तुम्हें जवाब दूंगा इसके लिए यही सच्ची भावना आवश्यक है।("उदओनी अस्तजिब लकुम" के लिए यह सच्ची भावना आवश्यक है) "यदि विनय और विनम्रता में सच्चाई की रूह नहीं तो वह टैं टैं से कम नहीं।(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 12 संस्करण 1985ई प्रकाशित यू. के) (अर्थात तोता जिस तरह बोलता है उसी तरह है) सच्ची भावना पैदा करनी चाहिए। विनय और विनम्रता पैदा करनी चाहिए अगर वह नहीं तो कोई लाभ नहीं।

अत: जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है कि नमाज़ में विनम्रता और विनय हो तो अल्लाह तआला स्वीकार कहता है। फिर आप ने यह स्पष्टता फरमाई कि नमाज़ की विभिन्न स्थितियाँ जैसे क़याम है रुकूअ है सिजदा है ये सब हालतें जो हैं एक विनय की अवस्था को प्रदर्शित करती हैं। एक व्याकुलता इंसान की प्रकट करती हैं आदमी कभी उठता है। कभी बैठता है। कभी सिजदा में जाता और इन स्थितियों की वजह से जो ज़ाहरी विनय की स्थिति है फरमाया कि इन स्थितियों के कारण से दिल में दर्द और चिन्ता पैदा होनी चाहिए। दिल में भी व्याकुलता और चिन्ता पैदा होनी चाहिए और फिर जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सजदे की स्थिति में भी क़याम में भी रुकूअ में भी फिर आन्नद तथा सुख होगा।

फिर अबोदियत के स्थान और वास्तविक विनम्रता और गुनाहों को जला कर नष्ट करने वाली नमाज़ का विवरण फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"मनुष्य की रूह जब सम्पूर्ण रूप से विनम्र हो जाती है।" (हर समय विनम्रता और अपने आप को कुछ न समझना होता है।) "तो वह ख़ुदा की ओर एक चश्मे की तरह बहती है। (विनम्रता पैदा होगी तो तभी ख़ुदा की तरफ बहेगी।) "और अल्लाह के अतिरिक्त सब से दूरी हो जाती है और उस समय ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है।" इंसान जब कोशिश करे और अल्लाह तआला से इनाम मांगते हुए अल्लाह तआला के अतिरिक्त प्रत्येक चीज़ से संबंध तोड़ता है तब ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है और जब ख़ुदा तआला से यह प्यार इंसान पर गिरे तो आपने फ़रमाया कि गुनाह जलकर नष्ट हो जाते हैं और फिर स्थायी नमाज़ में आन्नद की स्थिति पैदा हो जाती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 10 संस्करण 1985ई प्रकाशित यू. के)

अत: बजाय यह शिकवा करने या मन में यह विचार लाने कि हमारी नमाज़ हमें मज़ा नहीं देतीं। हमें अल्लाह तआला से इस विशेष संबंध बनाने की कोशिश करनी चाहिए। अपनी अवस्थाओं को देखें कि हम केवल टकरें मार रहे हैं या नमाज़ का हक़ अदा कर रहे हैं।

फिर नमाज़ में एक नूर और सुख पाने के तरीके के बारे में अधिक बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"नमाज़ का प्रावधान और नियमितता बहुत ज़रूरी चीज़ है ताकि सबसे पहले वह एक दृढ़ आदत की तरह स्थापित हो।"(एक ऐसी आदत बन जाए जो मज़बूत हो जाए) "और अल्लाह तआला की ओर लौटने का विचार हो।" (अल्लाह तआला की ओर जाने का विचार अपने मन में हो। फिर धीरे-धीरे समय आ जाता है जब ये बातें हो जाएंगी जब पक्की आदत हो जाएगी तो) " फिर धीरे धीरे ऐसा समय आ जाता है कि पूर्ण रूप से प्रत्येक से दूरी की हालत में इंसान एक नूर और एक आन्नद का वारिस हो जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 10 संस्करण 1985ई प्रकाशित यू. के)

फिर आदमी दुनिया से कट जाता है। अल्लाह तआला की ओर ध्यान पैदा हो जाता है और फिर नमाज़ में वह सुख और आन्नद आना शुरू हो जाता है।

इसलिए पहले नमाज़ की आदत ज़रूरी है। अपने आप को नमाज़ के लिए पाबन्द करना आवश्यक है। चाहे मनुष्य को बाहरी हालत में नमाज़ों का लाभ दिखाई देता हो या न लेकिन नमाज़ें बहरहाल पढ़नी हैं क्योंकि यह फर्ज़ हैं और यह समझकर आदत डालनी ज़रूरी है कि मैंने प्रत्येक हालत में अल्लाह तआला की ओर ही लौटना है। प्रत्येक ज़रूरत के लिए उसके पास ही जाना है। उसी से मांगना है। यह स्थिरता अगर रहेगी तो एक समय आएगा कि नमाज़ के हक भी अदा होने शुरू हो जाएँगे। नमाज़ों में आन्नद भी आना शुरू हो जाएगा। फिर पूछने पर कुछ लोग जवाब देते हैं इन का यह जवाब नहीं होगा कि मैं कोशिश करता हूँ कि नमाज़ पढ़ूँ लेकिन सुस्ती हो जाती है। आप ने एक अवसर पर फरमाया कि उस समय सुस्ती होती ही जब नमाज़ का महत्त्व नहीं होता(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 6-7 संस्करण

1985ई प्रकाशित यू. के) और ग़ैर अल्लाह को मनुष्य महत्त्वपूर्ण समझ रहा होता है अगर अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास है तो कैसे हो सकता है कि सुस्ती हो। तो आज दुनिया के जो हालात हो रहे हैं उनके बुरे प्रभावों से अपने आप को और अपनी नस्लों को बचाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ पवित्र होकर झुकना बहुत जरूरी है और इस झुकने का सब से अच्छा माध्यम अल्लाह तआला और उसके रसूल और इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही बताया है कि अपनी नमाज़ों की अदायगी और सुरक्षा की तरफ हम ध्यान दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"याद रखें कि इस सिलसिले में प्रवेश करने से दुनिया उद्देश्य न हो बल्कि ख़ुदा तआला की ख़ुशी उद्देश्य हो क्योंकि दुनिया तो गुज़रने की जगह है वह तो किसी न किसी रंग में गुज़र जाएगी। फारसी का पद्य की एक पंक्ति है। आपने फरमाया कि

"शब तनूर गज़शत व शब समूर गज़शत"

(कि रात ठंडी हो या गर्म हो गुज़र ही जाती है हालात अच्छे हों या बुरे हों गुज़र ही जाते हैं।) फरमाया कि "दुनिया और उसके स्वार्थों और लक्ष्यों को बिल्कुल अलग रखो उन्हें धर्म के साथ कभी न मिलाओ क्योंकि दुनिया नष्ट होने वाली चीज़ है और धर्म और उस के परिणाम बाकी रहने वाले हैं। दुनिया की उम्र बहुत थोड़ी होती है। तुम देखते हो कि हर क्षण और हर दम हज़ारों मौतें होती हैं। विभिन्न प्रकार की अपत्तियां और बीमारियों दुनिया का अंत कर रही हैं। कभी हैज़ा नष्ट करता है अब प्लेग मार रही है। (उस ज़माने में प्लेग फैला हुआ था।) "किसी को क्या पता है कि कौन कब तक जीवित रहेगा। जब मौत का पता नहीं कि किस समय आ जाएगी फिर कैसी ग़लती और बेहूदगी है कि इससे बेख़बर रहे। इसलिए जरूरी है कि परलोक की चिंता करो। जो परलोक की चिंता करेंगे अल्लाह तआला दुनिया में उस पर दया करेगा। अल्लाह तआला का वादा है कि जब मनुष्य पूर्ण मोमिन बनता है तो वह उस के और उसके ग़ैर में अंतर रख देता है इसलिए पहले मोमिन बनो और यह उसी तरह हो सकता है कि बैअत के शुद्ध उद्देशेयों के साथ जो ख़ुदा तआला को चाहने और तक्वा पर आधारित हैं दुनिया के उद्देश्यों को कदापि न मिलाए। नमाज़ों की पाबन्दी करो और तौबा और माफी में लगे रहो। मानव जाति के अधिकारों की रक्षा करो और किसी को दुःख न दो। पवित्रता और नेकी में तरक्की करो तो अल्लाह तआला सभी प्रकार का फज़ल कर देगा। महिलाओं को भी अपने घरों में नसीहत करो कि वह नमाज़ की पाबंदी करें और उन्हें गिला शिकवा और चुग़ली से रोको। पवित्रता और नेकी उन्हें सिखाओ। हमारी ओर से केवल समझाना शर्त है इसे लागू करना तुम्हारा काम है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 145-146 संस्करण 1985ई प्रकाशित यू. के)

ग़ैरों को समझाएं, महिलाओं को समझाएं या बच्चों की समझाएं तो इसके लिए ख़ुद भी पवित्रता और नेकी के नमूने दिखाने होंगे।

फिर परमाया कि "पांच बार अपनी नमाज़ों में दुआ करो। अपनी ज़बान में भी दुआ करनी मना नहीं है। नमाज़ का मज़ा नहीं आता है जब तक कि हुज़ूर न हो।" (अर्थात विशेष ध्यान पैदा न हो और दिल की पवित्रता पैदा नहीं होती जब तक विनम्रता न हो। विनम्रता जब पैदा होती है जो यह समझ आ जाए कि क्या पढ़ता है। इसलिए अपनी ज़बान में अपनी उद्देश्य प्रस्तुत करने के लिए जोश और व्याकुलता पैदा हो सकती है लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि नमाज़ को अपनी ज़बान में ही पढ़ो। नहीं, मेरा मतलब है कि मसनून दुआ और ज़िक्र के बाद अपनी ज़बान में भी नमाज़ दुआ किया करो। वरना नमाज़ के इन शब्दों में ख़ुदा ने एक बरकत रखी हुई है। नमाज़ दुआ ही का नाम है इसलिए इस में दुआ करो कि वह तुम्हें दुनिया और आख़िरत की आफतों से बचाए और अन्जाम अच्छा हो और सब काम तुम्हारे उसकी इच्छा के अनुसार हों। अपनी पत्नी बच्चों के लिए भी दुआ करो। नेक इंसान बनो। प्रत्येक प्रकार की बुराई से बचो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 145-146 संस्करण 1985 ई प्रकाशित यू. के)

अल्लाह तआला हमें नमाज़ की रक्षा करने की शक्ति प्रदान करे उनमें नियमित रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। अपनी नमाज़ों को शुद्ध होकर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हमारी नमाज़ में सुख और आन्नद पैदा करे। कभी हम इस में सुस्ती दिखाने वाले न हों और इस बात की सच्चाई को हम समझने वाले हों कि आज दुनिया की आपदाओं और मुसीबतों से हम उसी समय मुक्ति पा सकते हैं जब हम अल्लाह तआला की अबोदियत का हक देने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक दे।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का दुआओं भरा ख़त

अल्लाह तआला अख़बार बदर से समस्त काम करने वालों को मक्बूल ख़िदमते दीन करने की तौफीक प्रदान करे

आदरणीय मैनेजर साहिब साप्ताहिक बदर कादियान,

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

आप की तरफ से साप्ताहिक बदर के छः प्रान्तीय भाषाओं में पहली बार प्रकाशित किए गए विशेषांक प्राप्त हुए। जज़ाकमुल्लाह

अल्लाह तआला करे कि ये विशेष नम्बर बदर के पाठको के लिए ज्ञान वर्धक तथा आध्यात्मिक प्यास को तृप्त करने वाली हों और वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इश्क तथा मुहब्बत में बढ़ते हुए अपनी व्यावहारिक जिन्दगियों को उच्च चरित्र से संवारने वाले हों। अल्लाह तआला अख़बार बदर के समस्त काम करने वालों को मक्बूल ख़िदमते दीन करने की तौफीक प्रदान करे, इख़लास तथा वफा में बढ़ाता चला जाए और धर्म तथा दुनिया की अच्छाइयों का वारिस ठहराए। आमीन

वस्सलाम

खाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

गया। हज़रत मूसा बेहोश होकर गिर पड़े। फिर उन्होंने कहा करो मेरी तौबा मैं नहीं देखता। इसी तरह अल्लाह तआला की ज़ाहरी (भौतिक) शक्ल नहीं है। वह नूर है और हर जगह मौजूद है। ऊपर भी नीचे भी है, दाए भी है बाएं भी है। अब कनाडा में रात हो रही है और एशिया में दिन हो रहा है। अल्लाह तआला दोनों देख रहे हैं। नार्थ पूल और साऊथ पोल भी नज़र आ रहा है। अल्लाह तआला का प्रकाश हर तरफ बराबर पड़ रहा है। इस तरह का प्रकाश नहीं है जिस की कुछ रोशनी कम है। कशफ की हालत में अल्लाह तआला की आवाज़ सुन सकते हो। बड़ी शक्तिशाली और रोमांचक एक स्थिति है जिसे तुम सुनते ही कहती हो कि यह अल्लाह तआला है। जिसे तुम सपने में देखो साथ ही कहो कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में बात डाली है। दिल में गड़ जाती है। कुछ रूपक के रूप में कुछ हस्तियों में नज़र आता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं होता कि अल्लाह तआला वैसा है। केवल तुम्हारी शान्ति के लिए होता है। कई बार लोग देख लेते हैं कि अल्लाह तआला अमुक के रूप में बोल रहा है। वह अल्लाह तआला का गुण व्यक्त होता है। इसी तरह हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने इकबाल के उत्तर में एक नज़म लिखी थी जो भारत पाकिस्तान का बड़ा फलासफर और कवि था। उसने कहा कि अल्लाह तआला तू कहाँ है तू नज़र नहीं आता। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सबसे बड़ी पुत्री हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने जवाब लिखा कि मुझे शक्ल मजाज़ में अर्थात् मैं भौतिक रूप से नहीं दिख सकता हूँ लेकिन कैसे? पेड़, आकाश, कुदरतों के सौंदर्य, पहाड़ की घाटियों, नियागराफ़ाल में देखो। हर जगह दिख रहा है।

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 23 February 2017 Issue No. 8

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

कर न कर

हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब

* तू सभ्य और शिष्ट मनुष्य बनने का प्रयत्न कर ।
* तू भेंट करते समय सलाम करने में पहल कर ।
* तू मित्रों से हाथ मिलाया कर ।
* तू अपने मकान और कमरे की वस्तुओं को क्रमश: और उचित स्थान पर रखा कर ।
* तू इतना शोर न मचा कि घर वालों और पड़ोसियों को बुरा लगे ।
* तू अपने जूते पृथ्वी पर घसीट या रगड़ कर न चला कर ।
* तू सीटी बजाने की आदत न डाल (और लड़कियों के लिए तो यह आदत बहुत बुरी है ।
* तू अपना पाजामा और तहबन्द (लुंगी) नाभि से ऊपर बांधा कर ।
* हे विद्यार्थी ! तू पेन्सिल या होल्डर को न चबाया कर ।
* तू लकीर का फक़ीर न बन ।
* हे विद्यार्थी ! तू स्लेट पर लिखा हुआ थूक से न मिटा ।
* जब तू किसी धूल में भरे कपड़े को झाड़ने लगे तो लोगों से दूर ले जाकर झाड़ ।
* हे लड़के ! तू यथाशक्ति अन्य लोगों के साथ एक बिस्तर पर न सो ।
* तू साफ दरी पर मैले जूतों सहित न फिर ।
* तू हमेशा समय पर स्कूल, कालेज, आफ़िस या नौकरी पर जाया कर ।
* तू इस प्रकार न खा कि चपड़-चपड़ की आवाज़ लोगों को सुनाई दे ।
* तू अपने कपडों से नहीं अपितु रुमाल से नाक साफ किया कर ।
* हे स्त्री ! तू कंघी करने के पश्चात् अपने उतरे हुए बालों का गुच्छा इधर-उधर पर न फेंकती फिर ।
* तू बाज़ार में चलते-चलते कोई वस्तु न खा ।
* तू निर्धनों की मज्लिस का आनन्द भी लिया कर ।
* तू सभा में डकार मारने, जमुहाइयाँ लेने, ऊंघने और बदबूदार हवा निकालने से बच और यदि सभा में किसी से ऐसा हो जाए तो उस पर हंसी न कर ।
* जब तू किसी निमंत्रण में जाए तो निश्चित समय से देर करके न जा ।
* जब तू खाने से निवृत हो तो यथासंभव वहां देर न लगा ।
* हे लड़की ! तू अपने भाइयों के साथ एक बिस्तर में न सो ।
* तू यथासंभव पान खाने की आदत न डाल ।
* तू नाभि से नीचे और घुटने से ऊपर का शरीर लोगों के सामने नंगा न कर ।
* तू ऐसा वस्त्र न पहन जिससे तुझ पर उंगली उठाई जाए ।
* हे पुरुष ! तू अपना लिबास सादा और सूफ़ियों वाला रख ।
* तू जुमा (शुक्रवार) को छुट्टी मना ।
* तू अपने हाथ में छड़ी लेकर घर से बाहर निकला कर ।
* तू जिस वस्तु को जहां से उठाए फिर वहीं रख दिया कर ।
* तू सभा में हमेशा ऊँचे स्थान पर बैठने का प्रयत्न न कर ।
* हे स्त्री ! तू हद से बढ़कर श्रृंगार न कर ।
* हे स्त्री ! तू नामुहरम (अर्थात जिन लोगों से निकाह वैध है) पुरुष के साथ एकान्त में न बैठ ।
* हे स्त्री ! तू उन पुरुषों को जिन से निकाह वैध है अपने पति की आज्ञा के बिना घर में न आने दे ।
* तू अपनी नाक से हर समय सुड़-सुड़ न किया कर।
* तू रात को खुले लौ का दीपक और खुली आग को बुझा कर सो ।
* तू दूसरे की पुस्तक पर उसकी आज्ञा के बिना निशान न लगा, न उस पर नोट लिख ।
* तू पानी के बरतन को ढ़क कर रख ।
* तू दूसरों के सामने अपनी नाक में उंगली न दे ।
* जब तू किसी सभा में हो तो दांतो में तिनका न डाला कर ।
* तूझे जमुहाई आए तो मुँह पर हाथ रख लिया कर ।
* तू पीने के पानी में अपनी उंगलियां या हाथ न डुबो ।
* तू सालन भरे हुए हाथ अपनी दाढ़ी से न पोंछा कर।
* तू लिखते समय कलम झटक कर आस-पास की वस्तुओं पर धब्बे न डाल ।
* तू भोजन करके अपने हाथ इस प्रकार धो कि उंगलियों पर चिकनाई तथा हल्दी का निशान शेष न रहे ।
* तू स्याही से अपने हाथों और कपड़ों को खराब न कर ।
* हे पुरुष ! तू स्त्रियों की भांति बनाव, श्रृंगार में न लगा रह ।
* तू मकान की दीवारों तथा फ़र्श को अपने थूक या पान की पीक से गन्दा न कर ।
* तू अपने नाख़ून दांतो से न कुतरा कर ।
* तू यथासंभव लिफ़ाफ़े को थूक से न चिपका अपितु पानी लगा ।
* तू सभा में अपनी उंगलियां न चटका ।
* तू किसी सभा में हो तो न लेट ।
* तू आंखे मार कर या मटका कर बातें करने की आदत न डाल ।
* तू अपना कपड़ा या पुस्तक मुँह से न चूसा कर और न कुतरा कर ।
* तू यथासामर्थ्य अपनी बेटी का विवाह सत्रह अठारह वर्ष की आयु में कर दे ।
* तू जवान विधवा स्त्री के विवाह के लिए कोशिश करता रह।
* हे स्त्री ! तू ग़ैर मर्द के सम्मुख अपने सौंदर्य एवं श्रृंगार को प्रदर्शित न कर ।
* तू आस्तीन से अपनी नाक न पोंछ ।
* जब तू बाज़ार में से गुज़रे तो मार्ग पर चलने वालों को सलाम कर, किसी के मार्ग में बाधा न डाल और सड़क के एक ओर होकर चल ।
* तू ऐसी अंजुमनों, सोसायटियों या कमेटियों का सदस्य बन जिनका कार्य निर्धनों की सहायता, नेकी का प्रचार तथा प्रजा को लाभ पहुंचाना हो ।
* तू किसी ख़तरनाक हथियार (शस्त्र) का मुख किसी मनुष्य की ओर न कर ।
* तू मस्जिदों में तथा पब्लिक जल्सों में अपने अच्छे कपड़े पहन कर उपस्थित हुआ कर ।
* तू अपने बच्चों को बुरी बातों से रोक, अच्छी बातों की प्रेरणा दे और उनको कष्ट सहन करना सिखा ।
* तू यथासामर्थ्य हमेशा सभ्य ढ़ग से शास्त्रार्थ (मुबाहसा) कर और व्यक्तिगत बातों पर हमला न कर ।
* तू स्वयं ही बात करके स्वयं ही न हंसा कर ।
* तू किसी जल्से में लोगों पर से फलांगता हुआ प्रवेश न हो ।
* जो मनुष्य समृद्धि रखते हुए भी विवाह न करे वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की उम्मत में से नहीं ।
* जो व्यक्ति बच्चों के डर से शादी न करे वह भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की उम्मत में से नहीं ।
* यदि तुझे सामर्थ्य हो तो अपने पास एक घड़ी अवश्य रख ।
* तू बाज़ार में नंगे सिर और नंगे पैर न फिर ।
* जब दो व्यक्ति बातें कर रहें हों तो तू उनमें अकारण दखल न दे ।
* तू अपने खाने – पीने की चीज़ों को मिट्टी और धूल से बचा ।
* तू अपने घर की छतों और दीवारों को मकड़ी के जालों से साफ रख ।
* तू अपनी बातचीत में मूर्खतापूर्ण शब्दों का प्रयोग न किया कर ।
* तू समाज में किसी गुप्त सोसायटी का सदस्य न बन ।
* तू केवल एक पैर में जूता पहन कर न चल ।
* तू अपनी रद्दी और कूडा-कर्कट हर स्थान पर बिखेरने की बजाए एक टोकरी में डाला कर ।
* तू कष्ट देने वाले जानवरों (दतैया, सांप, बिच्छू इत्यादि) को कष्ट पहुंचाने से पूर्व ही मार दे क्योंकि यह पाप नहीं बल्कि पुण्य है तथा मनुष्यों पर दया कर ।
* तू पुरुष होकर कोई आभूषण न पहन (चांदी की अंगूठी के अतिरिक्त) ।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad